Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

"गिजुमाई के शिक्षा दर्षन तथा व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन"

शोध निर्देषक :
डॉ. अनिल कुमार
(प्रोफेसर)
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

शोधकर्ता :
अजय पाल सिंह
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देष्य गिजुमाई के शिक्षा दर्षन तथा व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना है। गिजुभाई उच्च कोटि के शिक्षाविद् व बहूमुखी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी थे। उन्होंने अनेक रचनाओं का सर्जन किया तथा उनकी षिक्षा पद्धति मोण्टेसरी पद्धति से प्रभावित थी। बाल शिक्षा में मारिया माण्टेसरी के विचारों को समझ कर उन्हें आत्मसात करके उनमें नए प्राणों का संचार करके उन्हें भारतीय स्वरूप प्रदान करने वाले गिजुभाई का व्यक्तित्व बहुआयामी था।

Keywords:-षिक्षा दर्षन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

प्रस्तावना :–

देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए बच्चों की उचित शिक्षा की महती आवश्यकता होती है। इस तथ्य को पहचान कर देश के बचपन को सँवारने वाले श्री गिजुभाई जिनका पूरा नाम गिरिजा शंकर भगवान दास बधोका का जन्म 5 नवम्बर 1885 को तत्कालीन सौराष्ट्र की छेला नामक नदी के किनारे बसे वला नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री भगवान दास वधोका पेशे से वकील थे। उनकी माता काशीबा एक धार्मनिष्ठ सात्त्विक विचारों की महिला थी। गाँव के नदी के किनारे बसे होने के कारण उन्हें बचपन में प्रकृति के प्रांगण में स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण करने और मित्रमण्डली के साथ आनन्द उठाने का भरपूर अवसर मिला। पिता के वकील होने का उनकी वैचारिक क्षमता पर और माता की धार्मिक वृत्ति होने का उनकी सहिष्णुता और संवेदनशीलता पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

उस समय की परम्परा के अनुसार पाँच वर्ष की अवस्था में गिजुभाई का उपनयन संस्कार व सरस्वती पूजन कर पास के गाँव वल्लभीपुर के विद्यालय में प्रवेश दिलवाया गया। वल्लभीपुर की प्राथमिकशाला का वातावरण वला के उन्मुक्त वातावरण से बिल्कुल ही भिन्न था। विद्यालयों में डांट–डपट, मारपीट और भय का वातावरण था। अध्यापकों द्वारा विभिन्न प्रकारों से बालकों का दमन किया जाता था और 'उदण्ड' व 'अपराधी बालकों' से निपटने के लिए अनेक प्रकार के दण्ड दिए जाते थे। पाठशालाओं के उन दृश्यों और बालकों के प्रति अध्यापकों के दुर्व्यवहार ने गिजुभाई के बालमन पर बहुत कारूणिक प्रभाव छोड़ा। अपने साहित्य में गिजुभाई ने इसके अनेक मार्मिक चित्र खींचे हैं। प्राथमिकशाला में गिजुभाई बहुत ही होनहार विद्यार्थी थे। उनमें अद्भुत लगन और दृढ़ निश्चय था। पढ़ाई में तेजस्वी होने के साथ–साथ गिजुभाई का मन भाई–बन्धु(ओं के साथ घूमने–फिरने, प्राचीन खण्डहरों को देखने और साहसिक कार्य करने में स्वाभाविक रूप से रमता था। इन सबका उनंकी अवलोकन क्षमता को विकसित करने में बहुत योगदान रहा।

शोध अध्ययन का महत्व :–

गिजुभाई ने केवल बाल मन्दिर ही नहीं खोला अपितु उन्होंने बालकों के लिए साहित्य का भी सृजन किया। उन्होंने इस बात का भी अनुभव किया कि बालकों की शिक्षा का आरंभ घर से ही हो जाता है और घर पर यदि उन्हें उचित संस्कार न मिलें तो शिक्षा व्यर्थ है। अतः वे माता–पिता की, अभिभावकों की सभा बुलाकर उन्हें अपने विचारों की जानकारी देते, उन्हें अभिभावकत्व की शिक्षा देते और पत्र–पत्रिकाओं में लेख लिखकर अभिभावकों को समन्तुष्ट करने का प्रयास करते। उन्होंने बाल साहित्य की रचना की, जिसके प्रचार–प्रसार में गोपाल भाई ने उनकी बड़ी सहायता की। गिजुभाई ने माण्टेसरी पद्धति का खूब प्रचार–प्रसार किया क्योंकि वे बालकों की शिक्षा के लिए उसे बहुत उपयुक्त मानते थे। इन्होंने 1925 में भावनगर में प्रथम माण्टेसरी सम्मेलन आयोजित किया। इसके साथ ही उन्होंने पहला अध्यापन मंदिर भी स्थापित किया जिसमें वे अपनी शैली के अनुरूप शिक्षकों को प्रशिक्षित करते थे।

समस्या कथन :–

"गिजुभाई के षिक्षा–दर्षन की आधुनिक षिक्षा में प्रासंगिकता : एक अध्ययन"

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में जिस अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। वह दार्षनिक अनुसंधान विधि है।

शोध अध्ययन के उद्देष्य :–

1. गिजुमाई : व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना।

2. आधुनिक षिक्षा व्यवस्था में गिजुभाई के षिक्षा दर्षन की सार्थकता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

मानवीय आत्मा बाल्यावस्था में बौद्धिक विकास के पूर्व भावनाओं का विकास सिद्ध करती है यही कारण है कि मानव जाति के विकास के इतिहास में बौद्धिक विषयों के विकास से पहले कला विषयों का विकास देखने में आता है। अतः एक बालक को बचपन से ही चित्रकला सिखाई जानी चाहिए।

बालक चित्र खींच सके इसके लिए आवश्यक है विद्यार्थियों को खुले विशाल आसमान के तले लम्बे–चौड़े मैदानों में दौड़ने कूदने का अवसर मिलना। तब आखें इन दृश्यों को संग्रहीत करके रखेंगी तथा जब भावनाओं के अतिरेक की दशा में इनमें से किसी का चित्रिण करके अपने जीवन मंथन को व्यवस्थित एवं शान्त करना होगा तब इनका उपयोग करेंगी तभी हम उसे कला सृजन कहेंगे और उस सूर्जक को चित्रकार। गिजुभाई के समय में चित्रकला प्राथमिक शाला के पाठ्यक्रम का अंग न थी। कुछ प्राथमिक शालाओं में चित्र कला की पुस्तकें होती थी जिन्हें वे व्यर्थ मानते थे क्योंकि उनकी दृष्टि में चित्रकला सृजन का विषय है अनुकरण का नहीं। चित्र कला सिखाने के लिए गिजुभाई माण्टेसरी पद्धति की छह सन्दूकों वाली पेटी का व कार्डों वाली तीन पेटियों का उल्लेख करते हैं जिससे बालकों में रेखाओं की समझ विकसित हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. ईष्वर भाई समिति का प्रतिवेदन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
2. कल्याण 27वां अंक : गीता प्रेस गोरखपुर 1977
3. यषपाल समिति का प्रतिवेदन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, 1993
4. सिंह परमेष्वर प्रसाद : भारत के महान षिक्षाषास्त्री : सन्मार्ग प्रकाषन दिल्ली, 1997
5. सिन्हा, एच.सी. : शैक्षिक अनुसंधान : इण्टरनेषनल पब्लिषिंग हाऊस, मेरठ, 1979